प्रारंभिक परीक्षा

पारस्परिक टैरिफ(Reciprocal Tariffs)

संदर्भ

हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने सभी देशों पर "पारस्परिक टैरिफ" लगाने की अपनी योजना की घोषणा की है।

पारस्परिक टैरिफ क्या हैं?

- **पारस्परिक टैरिफ एक कर या व्यापार प्रतिबंध है जो एक देश द्वारा दूसरे देश द्वारा की गई समान कार्रवाइयों के जवाब में लगाया जाता है।**
- इसका लक्ष्य टैरिफ दरों में निष्पक्षता सुनिश्चित करके राष्ट्रों के बीच व्यापार में संतुलन बनाना है।
- जबकि इसका उद्देश्य स्थानीय उद्योगों की रक्षा करना है, पारस्परिक शुल्कों से व्यापार युद्ध और आर्थिक व्यवधान पैदा हो सकते हैं।

ऐतिहासिक संदर्भ:

- द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से वैश्विक व्यापार मुक्त व्यापार समझौतों की ओर बढ़ गया है।
- GATT (टैरिफ और व्यापार पर सामान्य समझौता) और WTO (विश्व व्यापार संगठन) जैसे समझौतों ने सुनिश्चित किया कि विकासशील देशों को अधिमान्य व्यवहार मिले।
- इस प्रणाली के तहत, विकासशील देश अपने उद्योगों की सुरक्षा के लिए उच्च टैरिफ लगा सकते थे, जबकि विकसित देशों ने कम टैरिफ बनाए रखा।

ट्रम्प का दृष्टिकोण:

- विकासशील देशों के लिए अधिमान्य व्यवहार समाप्त करना।
- अमेरिका अब अमेरिकी निर्यात पर अन्य देशों के टैरिफ स्तरों की बराबरी करेगा।
- ट्रम्प इसे एक "निष्पक्ष" प्रणाली कहते हैं जहां अमेरिका को अब असमान टैरिफ के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है।

भारतीय निर्यात पर प्रभाव -

- **संयुक्त राज्य अमेरिका भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार है, जो वित्तीय वर्ष 2024 में भारत के कुल निर्यात का लगभग 17.7% है।**
- प्रमुख निर्यात क्षेत्रों में फार्मास्यूटिकल्स, पेट्रोकेमिकल्स, कपड़ा और मशीनरी शामिल हैं।
- पारस्परिक टैरिफ लगाने से बढ़ी हुई कीमतों के कारण अमेरिकी बाजार में भारतीय सामान कम प्रतिस्पर्धी हो सकते हैं, जिससे संभावित रूप से निर्यात मात्रा में गिरावट आ सकती है।

स्रोत: [Economic Times - what is Reciprocal Tariffs]

नॉक्टर्नल बुल चींटियाँ नेविगेशन के लिए ध्रुवीकृत चाँदनी का उपयोग करती हैं

संदर्भ

वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि दो नॉक्टर्नल बुल चींटी प्रजातियाँ, मायरमेसिया पाइरिफोर्मिस और मायरमेसिया मिडास, ध्रुवीकृत चांदनी(polarised moonlight) का उपयोग करके रात में नेविगेट करती हैं।

ध्रुवीकृत प्रकाश(Polarised Light) क्या है?

- सूर्य और चंद्रमा से प्रकाश सामान्यतः सभी दिशाओं में फैलता है। इसे **अध्रुवीकृत प्रकाश** कहते हैं।
- **जब यह प्रकाश पृथ्वी के वायुमंडल से होकर गुजरता है तो बिखर जाता है और ध्रुवीकृत हो जाता है।**
- **ध्रुवीकृत प्रकाश का अर्थ है कि प्रकाश तरंगें एक विशिष्ट दिशा में व्यवस्थित होती हैं, जिससे आकाश में एक पैटर्न बनता है। इस पैटर्न को ई-वेक्टर पैटर्न(E-vector pattern) कहा जाता है**।
- कुछ जानवर, जैसे चींटियाँ, इस पैटर्न को देख सकती हैं और नेविगेट करने के लिए इसे अंतर्निहित कंपास की तरह उपयोग कर सकती हैं।

रात्रिचर कीटों के लिए ध्रुवीकृत प्रकाश क्यों महत्वपूर्ण है?

- कई कीड़े, जैसे चींटियाँ और मधुमक्खियाँ, रात में घूमने के लिए चंद्रमा की स्थिति का उपयोग करते हैं।
- हालाँकि, चंद्रमा हमेशा दिखाई नहीं देता है - यह आकार बदलता है (बढ़ता-घटता है), बादलों से ढक जाता है, या पेड़ों द्वारा अवरुद्ध हो जाता है।
- ध्रुवीकृत चाँदनी, भले ही सूर्य के प्रकाश की तुलना में बहुत धुंधली हो, फिर भी आकाश में एक पैटर्न बनाती है।
- कुछ कीड़े इस पैटर्न का पता लगा सकते हैं और उसका अनुसरण कर सकते हैं, जिससे उन्हें अंधेरी रातों में भी अपना रास्ता खोजने में मदद मिलती है।

नॉक्टर्नल बुल चींटियाँ नेविगेशन के लिए ध्रुवीकृत चाँदनी का उपयोग कैसे करती हैं?

- चींटी प्रजातियाँ **मायरमेसिया पाइरीफोर्मिस** और **मायरमेसिया मिडास** दिन के दौरान नेविगेट करने के लिए ध्रुवीकृत सूर्य के प्रकाश का उपयोग करने के लिए जानी जाती थीं।
- लेकिन वैज्ञानिकों को यह नहीं पता था कि सूर्य की रोशनी गायब होने के बाद रात में वे अपना रास्ता कैसे खोजते थे।
- **उन्होंने देखा कि:**
    - एम. मिडास चींटियाँ देर रात घर लौटीं।
    - एम. पाइरीफोर्मिस चींटियाँ पूर्णिमा की रातों में अधिक सक्रिय थीं।
- **नई खोज:**
    - वैज्ञानिकों ने पाया कि ये चींटियाँ ध्रुवीकृत चांदनी को देख और उसका अनुसरण कर सकती हैं, जैसे वे ध्रुवीकृत सूर्य के प्रकाश का उपयोग करती हैं।
    - यहां तक कि जब चंद्रमा बहुत धुंधला हो (जैसे कि अर्धचंद्र के दौरान, जब यह 80% गहरा होता है), तब भी चींटियां अपना रास्ता ढूंढ सकती हैं।
    - चांदनी के ध्रुवीकरण में पैटर्न एक छिपे हुए नक्शे की तरह काम करता है, जो चींटियों को घर का मार्गदर्शन देता है।

स्रोत: **The Hindu - second animal to find its way by polarised moonlight**

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के 10 वर्ष

संदर्भ

फरवरी 2025 में मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना के 10 वर्ष पूरे हो गये।

मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना (SHC) के बारे में -

- **इसे देश के सभी किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड जारी करने में राज्य सरकारों की सहायता के लिए 19 फरवरी, 2015 को सूरतगढ़, राजस्थान में लॉन्च किया गया था।**
- **मृदा स्वास्थ्य कार्ड किसानों को उनकी मिट्टी में पोषक तत्वों की स्थिति के बारे में जानकारी प्रदान करता है**, साथ ही मिट्टी के स्वास्थ्य और इसकी उर्वरता में सुधार के लिए लागू किए जाने वाले पोषक तत्वों की उचित खुराक की सिफारिश भी करता है।
- **SHC योजना को वर्ष 2022-23 से 'मृदा स्वास्थ्य और उर्वरता' नाम के तहत इसके घटकों में से एक के रूप में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना (RKVY) योजना में विलय कर दिया गया है।**

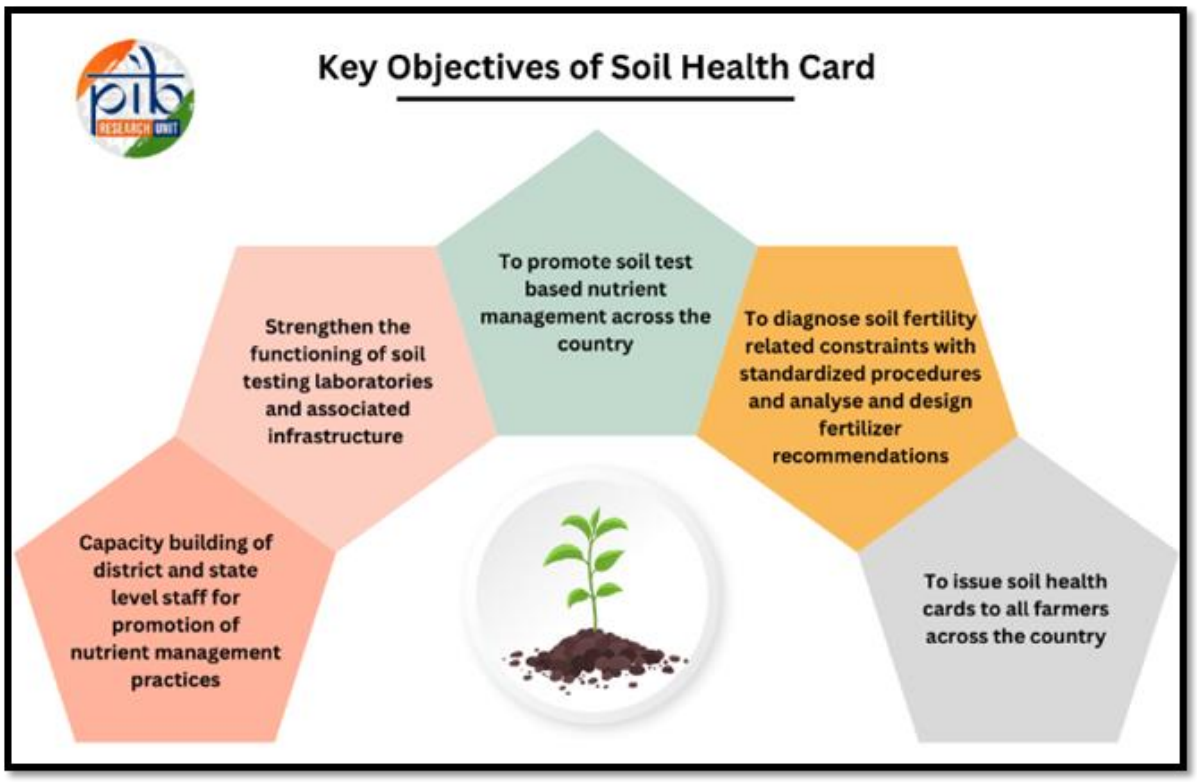

मृदा स्वास्थ्य कार्ड (SHC) की मुख्य विशेषताएं -

- **यह मिट्टी की पोषक स्थिति और मिट्टी की संरचना के आधार पर उर्वरक की सिफारिशें प्रदान करता है।**
- **शामिल पैरामीटर (12 प्रमुख संकेतक):**
  - **मैक्रोन्यूट्रिएंट्स:** नाइट्रोजन (N), फॉस्फोरस (P), पोटेशियम (K), सल्फर (S).
  - **माइक्रोन्यूट्रिएंट्स:** जिंक (Zn), आयरन (Fe), कॉपर (Cu), मैंगनीज (Mn), बोरोन (Bo).
  - **अन्य मृदा गुण: पीएच** (अम्लता या क्षारीयता), **ईसी** (विद्युत चालकता), **ओसी** (कार्बनिक कार्बन)।
- **नमूनाकरण आवृत्ति:** वर्ष में दो बार (रबी और खरीफ फसलों की कटाई के बाद)। जब खेत में कोई खड़ी फसल न हो, तब किया जाता है।

SHC की उपलब्धि -

- **फरवरी 2025 तक, भारत सरकार ने देश भर में 24.74 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड बनाए हैं।**
- किसानों को जारी SHC की संख्या 16 लाख (2020-21) से बढ़कर 53 लाख (2024-25) हो गई।
- भारतीय मृदा और भूमि उपयोग सर्वेक्षण ने 21 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के लिए 1,987 ग्राम-स्तरीय मिट्टी उर्वरता मानचित्र तैयार किए।

स्रोत: **PIB - Soil Health Card**

वैश्विक बर्फ आवरण रिकॉर्ड निम्नतम स्तर पर पहुंचा

संदर्भ

फरवरी 2025 में वैश्विक समुद्री बर्फ का आवरण घटकर 15.76 मिलियन वर्ग किमी के रिकॉर्ड निचले स्तर पर आ गया।

समुद्री बर्फ क्या है?

- **समुद्री बर्फ से तात्पर्य ध्रुवीय क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से तैरती बर्फ से है, जो समुद्र के पानी के जमने से बनती है।**
- **यह आइसबर्ग, ग्लेशियरों, आइस शीट्स और आइस शेल्फ से अलग है, जो भूमि से उत्पन्न होते हैं।**
- **मौसमी परिवर्तन:**
    - सर्दियों में फैलती है और गर्मियों में पिघलती है।
    - कुछ समुद्री बर्फ वर्ष भर बनी रहती है।

समुद्री बर्फ़ की गिरावट में ऐतिहासिक रुझान -

- **आर्कटिक सागर की बर्फ का ह्रास**: प्रति दशक 12.2% की दर से सिकुड़ रही है।
    - **1970 के दशक के उत्तरार्ध से**: आर्कटिक समुद्री बर्फ तेजी से घट रही है।
        - एक अनुमान के अनुसार हर साल 77,800 वर्ग किमी समुद्री बर्फ नष्ट हो जाती है।
    - **वर्तमान स्थिति**: आर्कटिक समुद्री बर्फ साल के इस समय में सबसे कम दर्ज की गई है।
- **अंटार्कटिक समुद्री बर्फ का नुकसान**
    - **2015 तक अलग रुझान**: अंटार्कटिक समुद्री बर्फ में साल-दर-साल थोड़ी वृद्धि हुई।
    - **2014-2017**: अंटार्कटिका में 2 मिलियन वर्ग किमी समुद्री बर्फ नष्ट हो गई, जो स्पेन के आकार के चार गुना के बराबर है।
    - **2023**: अंटार्कटिक समुद्री बर्फ ऐतिहासिक रूप से निम्न अधिकतम स्तर पर पहुंच गई।
    - **2024-2025**: 2023 की तुलना में बर्फ के आवरण में थोड़ा सुधार हुआ लेकिन अभी भी 1981-2010 के औसत से 1.55 मिलियन वर्ग किमी कम है।

रिकॉर्ड निम्न बर्फ आवरण का कारण क्या है?

- **आर्कटिक कारक:**
    - **महासागरों का पानी गर्म होना:** महासागरों को ठंडा होने में अधिक समय लग रहा है, जिससे समुद्री बर्फ बनने में देरी हो रही है।
    - **बेरेंट्स और बेरिंग सागर में तूफान:** पतली बर्फ अधिक नाजुक होती है और आसानी से टूट जाती है।
    - **सामान्य से अधिक वायु तापमान:** विशेषकर स्वालबार्ड (नॉर्वे), हडसन बे (कनाडा) में।
- **अंटार्कटिक कारक:**
    - **बर्फ तोड़ने वाली हवाएँ:** आर्कटिक (जमीन से घिरा हुआ) के विपरीत, अंटार्कटिक समुद्री बर्फ महासागर से घिरा हुआ है, जिससे यह अधिक गतिशील और पतला हो जाता है।
    - **गर्म हवा और पानी का तापमान: आइस शीट्स(आइस शेल्फ)** के किनारों पर अधिक पिघलन।

समुद्री बर्फ़ के पिघलने के परिणाम -

- **त्वरित ग्लोबल वार्मिंग:**
    - **कम बर्फ = अधिक ऊष्मा अवशोषण**
    - सफेद समुद्री बर्फ सूर्य के प्रकाश को अंतरिक्ष में वापस परावर्तित करती है।
    - गहरे रंग का समुद्री पानी अधिक गर्मी अवशोषित करता है, जिससे तापमान बढ़ जाता है।

    - ध्रुवीय क्षेत्र शेष विश्व की तुलना में तेजी से गर्म हो रहे हैं।
- **महासागरीय धाराओं और वैश्विक जलवायु पर प्रभाव:**
    - बर्फ पिघलने से समुद्र में ताज़ा पानी निकलता है।
    - **कम लवणता और घनत्व:** सतह के पानी के नीचे की ओर प्रवाह को कम करता है और महासागरीय परिसंचरण को धीमा करता है।

स्रोत: **Indian Express - Global sea ice cover**

समाचार संक्षेप में

भारत IALA का उपाध्यक्ष चुना गया

- सिंगापुर में आयोजित प्रथम आम सभा के दौरान भारत को अंतर्राष्ट्रीय समुद्री नौवहन सहायता संघ (IALA) का उपाध्यक्ष चुना गया।

IALA के बारे में -

- **यह एक वैश्विक संगठन है जो नौवहन के लिए समुद्री सहायता को सुसंगत बनाने तथा कुशल और पर्यावरण की दृष्टि से जिम्मेदार समुद्री परिचालन सुनिश्चित करने के लिए समर्पित है।**
- इसकी **स्थापना 1957 में** एक गैर-सरकारी संगठन (NGO) के रूप में हुई थी।
- **मुख्यालय - सेंट-जर्मेन-एन-ले, फ्रांस।**
- **NGO से IGO**: इसने 2024 में 34 राज्यों द्वारा अनुमोदित एक सम्मेलन के आधार पर आधिकारिक तौर पर अपना दर्जा NGO से बदलकर अंतर-सरकारी संगठन (IGO) कर लिया।
- **उद्देश्य:**
  - समुद्री नौवहन सहायता के माध्यम से सुरक्षित और कुशल पोत आवागमन सुनिश्चित करना।
  - वैश्विक समुद्री नेविगेशन प्रणालियों का मानकीकरण करना।
  - टिकाऊ समुद्री पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना।
  - बेहतर नौवहन सुरक्षा के लिए प्रौद्योगिकी-संचालित समाधान की सुविधा प्रदान करना।
- **भारत दिसंबर 2025 में IALA परिषद की बैठक और सितंबर 2027 में मुंबई में IALA सम्मेलन और आम सभा की मेजबानी करेगा।**

स्रोत: PIB - IALA

ओपेक+

- **हाल ही में ब्राज़ील सरकार ने ओपेक+ में प्रवेश को मंजूरी दे दी है।**

पेट्रोलियम निर्यातक देशों का संगठन (ओपेक):

- **यह एक स्थायी, अंतर-सरकारी संगठन है, जिसे 1960 में बगदाद सम्मेलन में ईरान, इराक, कुवैत, सऊदी अरब और वेनेजुएला द्वारा बनाया गया था।**
- **मुख्यालय:** वियना, ऑस्ट्रिया।
- **उद्देश्य:** पेट्रोलियम उत्पादकों के लिए उचित और स्थिर मूल्य सुनिश्चित करने के लिए सदस्य देशों के बीच पेट्रोलियम नीतियों का समन्वय और एकीकरण करना।
- **सदस्य (12):** सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, ईरान, इराक, कुवैत, अल्जीरिया, इक्वेटोरियल गिनी, गैबॉन, लीबिया, नाइजीरिया, कांगो गणराज्य और वेनेजुएला।

ओपेक+

- **ओपेक प्लस की स्थापना 2016 में की गई थी, जब ओपेक देशों ने तेल के वैश्विक उत्पादन में कटौती करने के लिए समूह के बाहर अन्य तेल उत्पादक देशों के साथ गठबंधन करने का निर्णय लिया था।**
- **वर्तमान ओपेक+ सदस्य:** 12 ओपेक सदस्य और 10 गैर-ओपेक तेल निर्यातक देश।
  - रूस, अज़रबैजान, बहरीन, ब्रुनेई, कज़ाकिस्तान, मलेशिया, मैक्सिको, ओमान, दक्षिण सूडान और सूडान।

स्रोत: TOI - OPEC+

छत्रपति शिवाजी महाराज (1630 - 1680)

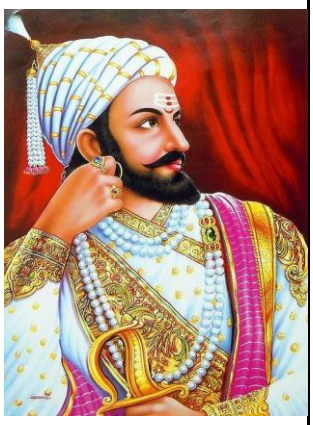

- **उनका जन्म 19 फरवरी 1630 को शिवनेरी किले (महाराष्ट्र) में दक्कन सल्तनत के सेनापति शाहजी भोसले और जीजाबाई के घर हुआ था।**
- **गुरु (संरक्षक)**: दादोजी कोंडदेव (प्रशासन, युद्ध और शासन सिखाया)।
- **उन्होंने मुगल और सल्तनत शासन के खिलाफ हिंदवी स्वराज्य (स्वशासन) की नींव रखी।**
- **6 जून 1674 को रायगढ़ किले में उनका छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक किया गया।**
- उन्होंने **अष्ट प्रधान (आठ मंत्रियों की परिषद)** के साथ एक सुव्यवस्थित प्रशासनिक व्यवस्था स्थापित की।
- उन्होंने पूरे महाराष्ट्र में रणनीतिक रूप से 300 से अधिक किलों पर कब्ज़ा किया और उनका निर्माण किया।
- **वह एक मजबूत नौसेना स्थापित करने वाले पहले भारतीय राजा थे। उन्होंने युद्धपोत बनाए और कोंकण तट को सुरक्षित किया।**
- **लड़ी गई प्रमुख लड़ाइयाँ:**
  - **प्रतापगढ़ की लड़ाई (1659)**: बीजापुर सल्तनत के अफ़ज़ल खान को हराया।
  - **कोल्हापुर की लड़ाई (1659):** आदिलशाही सेना को हराया।

स्रोत: **PIB - Shivaji Maharaj Jayanti**

सौर कोरोनल छिद्र(Solar Coronal Holes)

- भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (IIA) के एक नए अध्ययन ने सौर कोरोनल छिद्रों की तापीय और चुंबकीय क्षेत्र संरचनाओं का सटीक अनुमान लगाया है।

कोरोनल छिद्र क्या हैं?

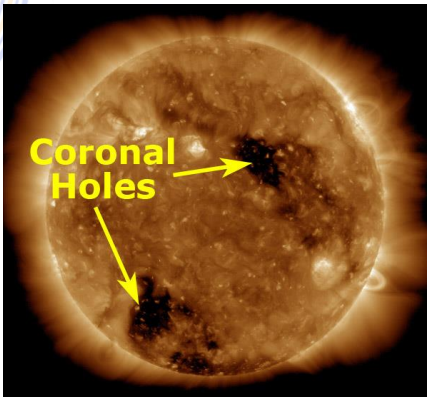

- **कोरोनल छिद्र सूर्य के एक्स-रे और अति पराबैंगनी (ईयूवी) चित्रों में दिखाई देने वाले अंधेरे क्षेत्र होते हैं।**
- **विशेषताएँ:**
  - अंतरिक्ष में फैली हुई खुली चुंबकीय क्षेत्र रेखाएं होती है।
  - सूर्य के वायुमंडल में कम घनत्व वाले क्षेत्र हैं।
  - तेज़ सौर हवा (450-800 किमी/सेकंड) के तीव्र स्रोत के रूप में कार्य करते हैं।
- **खोज:** पहली बार 1970 के दशक में एक्स-रे उपग्रहों द्वारा इसकी पहचान की गई।
- **कोरोनल छिद्रों का प्रभाव:**
  - कोरोनल छिद्रों से आने वाली उच्च गति वाली सौर हवा पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के साथ संपर्क करती है, जिसके कारण:
    - भूचुंबकीय तूफान
    - आयनमंडलीय गड़बड़ी, रेडियो संचार को प्रभावित करती है।
- **कोरोनल छिद्रों के अध्ययन का महत्व:**
  - कोरोनल छिद्रों के तापमान, विकिरण प्रवाह और ऊर्जा का अनुमान लगाने में मदद करता है।
  - सूर्य के अंदर उनकी उत्पत्ति की गहराई के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।
  - यह निर्धारित करता है कि विभिन्न अक्षांशों पर चुंबकीय क्षेत्र की ताकत कैसे भिन्न होती है।
  - अंतरिक्ष मौसम की बेहतर भविष्यवाणी।

स्रोत: **PIB - Solar Coronal Holes**

कैस्पियन पाइपलाइन कंसोर्टियम (CPC)

- **रूस के अनुसार, हाल ही में एक पम्पिंग स्टेशन पर यूक्रेनी ड्रोन हमले के बाद कैस्पियन पाइपलाइन कंसोर्टियम के माध्यम से तेल प्रवाह में 30-40% की कमी आई है।**

CPC के बारे में -

- **CPC की स्थापना 1992 में कैस्पियन सागर क्षेत्र से कच्चे तेल को वैश्विक बाजारों तक पहुंचाने के लिए की गई थी।**
- **पाइपलाइन मार्ग:**
  - यह कजाकिस्तान के तेंगिज़ तेल क्षेत्र से शुरू होकर नोवोरोस्सिय्स्क, रूस (काला सागर बंदरगाह) पर समाप्त होता है।
  - **लंबाई:** 1,500 किमी. और **क्षमता:** 1.5 मिलियन बैरल प्रति दिन (बीपीडी)
- **CPC पाइपलाइन की मुख्य विशेषताएं:**
  - सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्र की संस्थाओं से जुड़ी सबसे बड़ी अंतर्राष्ट्रीय तेल परिवहन परियोजनाओं में से एक है।
  - **कच्चे तेल का मुख्य स्रोत:** कजाकिस्तान (तेंगिज़, कराचागानक और काशागन क्षेत्र)।
  - **प्रमुख निर्यात गंतव्य:** यूरोप और अन्य वैश्विक बाजार।
  - **महत्व:**
    - यह फारस की खाड़ी और स्वेज नहर को पार करता है, तथा तेल निर्यात के लिए एक रणनीतिक विकल्प प्रदान करता है।
    - कजाकिस्तान की अर्थव्यवस्था के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके 80% से अधिक तेल निर्यात इसी पाइपलाइन के माध्यम से होता है।

स्रोत: **The Hindu - CPC**

संपादकीय सारांश

मणिपुर संकट

संदर्भ

मणिपुर में संविधान के अनुच्छेद 356 को लागू किया गया और राज्य राष्ट्रपति शासन के अधीन आ गया।

संकट के कारण -

म्यांमार में राजनीतिक अस्थिरता

- **फरवरी 2021 तख्तापलट**: म्यांमार की सेना (टाटमाडॉ) ने नागरिक सरकार को उखाड़ फेंका, जिससे बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुआ।
- सीमावर्ती क्षेत्रों में पीपुल्स डिफेंस फोर्सेज (पीडीएफ) और चिन नेशनल आर्मी (सीएनए) जैसे जातीय सशस्त्र संगठनों (ईएओ) का उदय।
- चिन, काचिन और सागांग क्षेत्रों में भारी लड़ाई के कारण बड़े पैमाने पर विस्थापन हुआ, जिससे भारतीय सीमावर्ती राज्य प्रभावित हुए।

मणिपुर में जातीय संघर्ष

- **मैतेई बनाम कुकी-ज़ोमी संघर्ष: मैतेई (इम्फाल घाटी में बहुमत) अनुसूचित जनजाति (एसटी) का दर्जा चाहते हैं, जिसका कुकी-ज़ोमी समूह विरोध करते हैं।**
    - **मई 2023 हिंसा**: मैतेई और कुकी-ज़ोमी समूहों के बीच संघर्ष बढ़ गया, जिसके परिणामस्वरूप मौतें, विस्थापन और गांवों का विनाश हुआ।

मणिपुर के संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में मानवीय संकट -

भारत-म्यांमार सीमावर्ती क्षेत्रों में डेटा की कमी

- सशस्त्र संघर्ष, विस्थापन और मानवीय संकटों के इतिहास के बावजूद भारत-म्यांमार सीमा क्षेत्र में डेटा की कमी बनी हुई है।
- मणिपुर संघर्ष में प्रतिबंधित पहुंच, प्रतिकूल सुरक्षा स्थितियों और गलत सूचना के कारण सटीक दस्तावेज़ीकरण का अभाव है।
- घाटी और पहाड़ी जिलों में राहत शिविरों में 58,000 से अधिक व्यक्तियों को जबरन विस्थापित किया गया है।
- लगभग 12,000 लोग मिजोरम भाग गए, जबकि 7,000 लोगों ने नागालैंड, असम और मेघालय में शरण ली।
- डेटा संग्रह खंडित बना हुआ है, आधिकारिक शिविरों के बाहर कई विस्थापित व्यक्ति लापता हैं।

अज्ञात क्षेत्र: डेटा गैप

- मैतेई और कुकी-ज़ोमी समुदायों के बीच अलगाव ने मानवीय सूचना प्रवाह को बाधित कर दिया है।
- रिश्तेदारों के साथ, अस्थायी आश्रयों में या राज्य के बाहर रहने वाले अपंजीकृत विस्थापितों का कोई हिसाब नहीं है।
- संघर्ष के कारण कई युवाओं ने शिक्षा और रोजगार के अवसरों के लिए मणिपुर छोड़ दिया।
- **स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच बाधित हुई है**:
    - कुकी-ज़ोमी-प्रभुत्व वाले जिले चिकित्सा देखभाल के लिए मिजोरम (चुरचांदपुर, चंदेल, टेंग्नौपाल) या नागालैंड (कांगपोकपी) पर निर्भर हैं।
    - इंफाल के तृतीयक अस्पताल पहाड़ी जिले की आबादी के लिए दुर्गम हैं।

राहत शिविरों में चिकित्सा चुनौतियां और संकट -

- इंफाल घाटी में विस्थापित आबादी को अपनी जेब से चिकित्सा पर भारी खर्च का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण इलाज बंद करना पड़ता है।

- संघर्ष के कारण स्वास्थ्य का बुनियादी ढांचा खराब हो गया है, जिससे कम रिपोर्ट की गई मृत्यु दर, कुपोषण और बीमारी का प्रकोप बढ़ गया है।
- **चिकित्सा आपातस्थितियों एवं मृत्यु के उदाहरण:**
    - 29 मई, 2023: डायलिसिस की कमी के कारण कांगपोकपी में एक 63 वर्षीय विस्थापित व्यक्ति की मृत्यु हो गई।
    - जून 2023: चुराचांदपुर के एक राहत शिविर में प्रसव के बाद अत्यधिक रक्तस्राव से एक माँ की मृत्यु हो गई।
    - 22 सितंबर, 2023: चुराचांदपुर के एक राहत शिविर में निमोनिया से एक साल की बच्ची की मौत हो गई।

मानसिक स्वास्थ्य संकट और आत्महत्याएं -

- **एक स्थानीय मीडिया रिपोर्ट में घाटी के राहत शिविरों में आत्महत्याओं सहित कम से कम 13 मौतें दर्ज की गईं।**
- **क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान संस्थान (RIMS)** के एक अध्ययन में पाया गया:
    - 65.8% विस्थापित व्यक्ति पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस डिसऑर्डर (PTSD) से पीड़ित हैं।
    - 24.8% लोग मध्यम चिंता**(anxiety)** का अनुभव करते हैं।
    - 15.2% लोगों में गंभीर चिंता की समस्या है।
- चूड़ाचांदपुर में चल रहे आत्महत्या अध्ययन (NEST सुसाइड सर्वे) में ऐसे मामले दर्ज किए गए**,** जिनमें एक 70 वर्षीय व्यक्ति भी शामिल है**,** जिसने शिविर के जीवन को अपनाने में संघर्ष के कारण अपनी जान ले ली।

बुनियादी मानवीय आवश्यकताओं में चुनौतियाँ -

- दो साल बाद भी भोजन, पानी और आश्रय काफी हद तक अधूरा है।
- 22,000 बच्चे अभी भी शिविरों में रह रहे हैं और उनकी शिक्षा बुरी तरह बाधित हो गई है।
- गंदगी की स्थिति, पानी की कमी, पौष्टिक भोजन की कमी और मुद्रास्फीति ने संकट को और भी गंभीर बना दिया है।

अनुशंसित उपाय -

- **मानवीय सहायता में वृद्धि**: कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (CSR) संस्थाओं सहित बाहरी एजेंसियों को मानवीय सहायता बढ़ानी चाहिए।
- **जल आपूर्ति संवर्धन**: विस्थापित लोग आय का एक बड़ा हिस्सा निजी जल स्रोतों पर खर्च करते हैं।
- **मानवीय गलियारों का निर्माण**: इंफाल हवाई अड्डे के माध्यम से आपातकालीन चिकित्सा निकासी सक्षम करें।
- **आपूर्ति श्रृंखला बहाल करना**: मुद्रास्फीति के दबाव को कम करने के लिए समुदायों के बीच आवश्यक वस्तुओं, भोजन और चिकित्सा आपूर्ति का परिवहन करना।

म्यांमार के राजनीतिक संकट का पूर्वोत्तर भारत पर प्रभाव -

शरणार्थियों का आगमन और मानवीय संकट

- **संयुक्त राष्ट्र शरणार्थी उच्चायुक्त (यूएनएचसीआर) के अनुसार, 31 दिसंबर, 2024 तक, म्यांमार से लगभग 95,600 शरणार्थी भारत में प्रवेश कर चुके थे, जिनमें से 73,400 शरणार्थी तख्तापलट के बाद आए थे।**
- छिद्रपूर्ण सीमा के कारण सटीक गिनती प्राप्त करना कठिन हो जाता है।
- मिज़ोरम ने म्यांमार के शरणार्थियों का स्वागत किया है, क्योंकि कई लोग मिज़ो-चिन-कुकी जातीय समूह से संबंधित हैं, जो सांस्कृतिक और पारिवारिक संबंध साझा करते हैं।
- हालाँकि, मणिपुर में तनाव बढ़ गया है, क्योंकि मैतेई समुदाय इस आमद को जनसांख्यिकीय खतरे के रूप में मानता है, जिससे चल रहे मैतेई-कुकी जातीय संघर्ष बिगड़ गया है।

मुक्त आवागमन व्यवस्था (FMR) प्रतिबंध

- मुक्त आवागमन व्यवस्था (FMR) जो शुरू में 16 किलोमीटर के भीतर मुक्त सीमा पार आवागमन की अनुमति देती थी, को सुरक्षा चिंताओं के कारण 2023 में निलंबित कर दिया गया था।
- दिसंबर 2024 में एक नया ढांचा पेश किया गया, जिसमें सीमा के केवल 10 किमी के भीतर आवाजाही की अनुमति दी गई और निर्दिष्ट प्रवेश/निकास बिंदुओं पर परमिट की आवश्यकता होगी।
- इस प्रतिबंध से स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, जिसमें सीमावर्ती हाट और अनौपचारिक सीमा पार व्यापार भी शामिल है।

सीमा व्यापार और संपर्क परियोजनाओं में गिरावट

- हिंसा ने मणिपुर को दक्षिण पूर्व एशिया के प्रवेश द्वार के रूप में उपयोग करने की भारत की योजना को बाधित कर दिया है।
- भारत-म्यांमार व्यापार का केंद्र, एक समय समृद्ध रहा मोरेह सीमावर्ती शहर, संघर्ष के कारण क्षतिग्रस्त हो गया है।
- भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, जो भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी का एक प्रमुख हिस्सा है, में देरी हो गई है।

भू-राजनीतिक निहितार्थ: म्यांमार में भारत बनाम चीन

- इसी तरह के प्रभाव का सामना कर रहे चीन ने म्यांमार के साथ अपनी सीमा के कुछ हिस्सों में बाड़(fencing) लगा दी है।
- बीजिंग म्यांमार में कुछ जातीय सशस्त्र संगठनों (ईएओ) का समर्थन करता है और नशीली दवाओं के सिंडिकेट से निपटने के लिए उनका इस्तेमाल किया है।
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (यूएनएससी) के सदस्य के रूप में चीन के पास म्यांमार में अधिक राजनयिक लाभ है, जबकि भारत को लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर काम करना चाहिए।
- स्पष्ट रणनीति के बिना, भारत को म्यांमार में भूराजनीतिक प्रभाव खोने का जोखिम है।

निष्कर्ष

- जबरन विस्थापन, स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे के पतन और बढ़ती आत्महत्याओं के कारण मणिपुर का मानवीय संकट गंभीर बना हुआ है।
- म्यांमार का आंतरिक संघर्ष शरणार्थियों की आमद और बाधित सीमा व्यापार के साथ भारत के पूर्वोत्तर में सुरक्षा चुनौतियों को बढ़ा देता है।
- FMR को समाप्त करने सहित भारत की नीतियां, दीर्घकालिक आर्थिक और राजनयिक संबंधों को नुकसान पहुंचा सकती हैं।
- मणिपुर और पूर्वोत्तर भारत में अस्थिरता को कम करने के लिए मानवीय सहायता, सीमा पार सहयोग और आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करने वाली एक व्यापक रणनीति आवश्यक है।

स्रोत: **The Hindu: Myanmar, Manipur, and strained borders**